ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292RNI
REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. No.- 213-215**

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-18, No.-IV, Issues-34, YEAR-Oct-Dec. 2024

दिनकर के काव्य में राष्ट्रीयता

रेखा राठौड़

शोध अध्येत्री, जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर (राजस्थान) भारत

Received-16.12.2024, Revised-15.12.2024, Accepted-29.12.2024 **E-mail : rekharathore5533@gmail.com**

सारांशः रामधारी सिंह दिनकर जिनका जन्म 30 सितम्बर सन् 1908 को बिहार के मुंगेर जिले के सिमरिया नामक गाँव में हुआ। कविवर श्री रामधारी सिंह दिनकर का आविर्भाव उस काव्यधारा से हुआ जो भारतेंदु, मैथिलीशरण गुप्त, रामनरेश त्रिपाठी, माखनलाल चतुर्वेदी, सुभद्रा कुमारी चौहान एवं बालकृष्ण शर्मा नवीन से होकर बहती आ रही थी। भारतीय पुनर्जागरण के क्षेत्र में जिन कवियों व रचनाकारों ने योगदान दिया उनमें राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर का विशेष स्थान है। छायावादी युग में पलकर भी दिनकर ने छायावादी प्रभावों से अलिप्त रहकर जो उदात्त राष्ट्रीय काव्य की सृष्टि की वह अवश्य स्पृहणीय है।

कुंजीभूत शब्द– आविर्भाव, काव्यधारा, भारतीय पुनर्जागरण, छायावादी युग, उदात्त, युगचारण, प्रादुर्भाव, अस्मितापूर्ण

दिनकर के काव्य मूल्यांकन से यही ध्वनित होता है कि वे वर्तमान समस्याओं का निराकरण उज्ज्वल भविष्य के परिप्रेक्ष्य में करते है। अतः वे युग कवि और युगचारण ही नहीं, अपितु भविष्य–दृष्टा चिन्तक कवि भी हैं। दिनकर की राष्ट्रीयता का प्रारंभ 'रेणुका' द्वारा होता हैं और 'परशुराम की प्रतीक्षा' में उसका पूर्ण विकास हो जाता है। आधुनिककाल की राष्ट्रीयता को अधिक तीव्र एवं प्रखर बनाने का श्रेष्ठतम कार्य रामधारी सिंह दिनकर ने किया। दिनकर का प्रादुर्भाव हिन्दी जगत् मे उस समय हुआ, जब भारत ब्रिटिश शासन के दमन चक्र में आक्रान्त, त्राण की उत्कण्ठा मन संजोए, मुक्ति की छटपटाहट घुटनभरा जीवन जी रहा था। दुर्बल राष्ट्र की पीड़ित व शोषित जनता को पुनः सामर्थ्यवान बनाकर अस्मितापूर्ण जीवन जीने का मार्ग प्रशस्त करना ही दिनकर का लक्ष्य था जिसकी सिद्धि के लिए वे जीवन पर्यन्त प्रयत्नशील रहे। व्यष्टि की भावना से ऊपर उठकर समष्टिगत कल्याण की भावना से वे जनजागरण के कार्य में अनवरत संलग्न रहे। दिनकर जी भारत की पीड़ित, शोषित एवं पददलित जनता के समर्थ प्रतिनिधि के रूप में हमारे सामने आते है। दिनकर जी ने अतीत का गौरवगान, देश की नव–निर्माण के लिए क्रांति का आह्वान, राष्ट्रवन्दना, जातीय एकता, गांधीवाद, अन्तर्राष्ट्रीयता आदि विभिन्न सामाजिक तथा राजनीतिक पहलुओं को अपनी काव्य रचनाओं में स्थान देकर उनके माध्यम से व्यापक, विस्तृत एवं उदात्त राष्ट्रीयता का स्वर बुलंद किया है। दिनकर ने 'भारत को रेशमी नगर', 'दिल्ली' शीर्षक में राष्ट्रवाद को मुखरित करते हुए अपने अखंड राष्ट्रीय भावना का परिचय दिया है। दिनकर की 'रेणुका', 'हुंकार', 'सामधेनी आदि काव्य रचनाओं में सर्वत्र कांतिपरक भावनाओं की प्रधानता दृष्टिगोचर होती है। दिनकर जी की राष्ट्रीय चेतना का आज के सन्दर्भ में अनुशीलन करना जनमानस में नैतिक मूल्यों की पुनर्स्थापना के लिए आवश्यक था।

काव्य क्षेत्र में दिनकर जी का अवतरण हिन्दी साहित्य की एक महान घटना है। आजादी की लड़ाई में लगे हुए बलिदानी भारत की जो वीरता जो अधीरता और आक्रोश दिनकर में आकर प्रकट हुआ कला के रूप में उसका विस्फोट पहले उतने जोर से नहीं हुआ था। उदय के साथ ही दिनकर का स्थान हिन्दी के क्रांतिकारी कवियों में बन गया और काव्यलोभी जनता उनके प्रत्येक स्वर को अपने कंठ में बसाने लगी। दिनकर जी को जनता का प्यार उनकी राष्ट्रीय कविताओं के कारण मिला। "दिनकर की कविता पर राष्ट्रीयता की छाप सबसे अधिक हैं।"[1] जिस क्रांति और राष्ट्र प्रेम की भावना को लेकर दिनकर ने काव्य–क्षेत्र में प्रवेश किया, उसे भावात्मक गहनता और वैचारिक उत्कृष्टता के साथ अपने समस्त काव्य जीवन में प्रमुख स्थान देते रहे। दिनकर को प्रारम्भ से ही विरोधों और विद्रोहों से सहानुभूति रही है। इनकी राष्ट्रीयता को गांधी युग की विद्रोही राष्ट्रीयता की संज्ञा दी जाती है। "दिनकर अपने ढंग के अकेले हिन्दी कवि है।"[2] 'नीम के पत्ते' और 'दिल्ली' काव्य संग्रह की कविताओं में देशभक्ति की अपेक्षा सामयिक प्रेरणा की प्रधानता है। राष्ट्रीयता का रसात्मक रूप दिनकर की उन कविताओं में मिलता हैं जिनकी प्रेरणा सामयिकता है, लेकिन जिनमें देशभक्ति की प्रधानता होती है। 'हुंकार' और 'परशुराम की प्रतीक्षा' संग्रह की कविताएँ इसी प्रकार की मानी जाती है। हिन्दी साहित्य के इतिहास में आदिकाल के अनेक कवियों ने एवं रीतिकाल के भूषण आदि ने मरने मारने का ओजस्वी शैली में वर्णन किया। दिनकर की 'परशुराम की प्रतीक्षा' नामक रचना उन्हीं कवियों की स्मृति कराती है। दिनकर के काव्य में राष्ट्रीयता के तीन पहलू है। प्रथम सोपान के अन्तर्गत दिनकर की वे काव्य रचनाएँ आती हैं जिनमें तीव्र देशप्रेम की भावना के साथ तीव्र सामयिक प्रेरणा का समन्वय है। द्वितीय सोपान के अन्तर्गत वे कविताएँ आती हैं जिनमें इतिहास–दृष्टि प्रधान है।

देश प्रेम की भावना को अतीत के जीवन–मूल्यों के प्रति आस्था के माध्यम से व्यक्त किया गया है, 'कुरूक्षेत्र', रश्मिरथी' के अतिरिक्त विभिन्न स्फुट कविताओं में राष्ट्रीय चेतना के इसी रूप की व्यंजना है। तीसरे सोपान के अन्तर्गत वे कविताएँ आती हैं जिनमें देश की भावना उतनी तीव्र और स्थायी नहीं है जितनी सामयिक प्रेरणा। 'दिल्ली' 'नीम के पत्ते' और 'हुंकार' संग्रह की कविताएँ इसके अन्तर्गत आती है। दिनकर के काव्य का शक्ति–केन्द्र राष्ट्र प्रेम ही है। माखनलाल चतुर्वेदी, भगवतीचरण वर्मा, गोपाल सिंह नेपाल, नरेन्द्र एवं बच्चन ने राष्ट्रीय काव्यधारा के रूप को जैसा संवारा वह स्वतंत्र अध्ययन का विषय है। राष्ट्रीय काव्यधारा के इन कवियों के बीच दिनकर का अप्रतिम स्थान माना जाता है। दिनकर की काव्य रचनाओं में राष्ट्रीय चेतना के विभिन्न स्तरों की व्यंजना हुई है।

कवि 'दिनकर' की प्रतिष्ठा रू राष्ट्रीय कवि के रूप में मानी जाती है। राष्ट्र में अतीत और वर्तमान के प्रति कवि की अनुभूति अत्यंत की सजग रही है। कवि का व्यक्तित्व राष्ट्र की परिस्थितियों के साथ एकाकार रहा है। इस एकाकारिता को स्वयं दिनकर जी व्यक्त करते हुए कहते है– "मेरी कविता के भीतर जो अनुभूतियाँ थी, जिसके अंक में बैठकर में रचना कर रहा था। कवि होने का सामर्थ्य शायद मुझमें नहीं था। यह क्षमता मुझमें भारतवर्ष का ध्यान करने से जागृत हुई यह शक्ति मुझमें भारतीय जनता की आकुलता को आत्मसात करने से स्फुरित हुई।"[3] रामधारीसिंह ने राष्ट्रीयता का उल्लेख करते हुए बताया कि भगवान की सन्तान जब दुःख और दरिद्रता से बिलखती है तो तब कवि उसकी सृष्टि के ध्वंस के लिए तैयार हो जाता है–

"जरा तू बोल तो यारी धरा हम फूँक देंगे। पड़ा जो पंथ में गिरि कर उसे दो टूक देंगे।।
कहीं कुछ पूछने बूढ़ा विधाता आज आया। कहेंगे, हाँ तुम्हारी सृष्टि को हमने मिटाया।।"[4]

अनुरूपी लेखक/ संयुक्त लेखक

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-18, No.-IV, Issues-34, YEAR-Oct-Dec. 2024

कलिंग विजय में युद्ध के विनाशक एवं सर्व विध्वंसक परिणाम को देखकर कवि दिनकर का हृदय उद्वेलित हो उठा था। रक्त से सनी हुई इस विजय को सहृदय कवि बिल्कुल स्वीकार नहीं कर सकता था। युद्ध के भीषण प्रतिफलन की ओर संकेत करते हुए कवि कहते है–

"युद्ध का परिणाम
युद्ध का परिणाम हास–त्रास,
युद्ध का परिणाम सत्यानाश।"[5]

दिनकर ने सामाजिक सन्दर्भ में राष्ट्रीय चेतना को अपनी दिल्ली, हाहाकार आदि कविताओं में शोषकों के प्रति घृणा प्रकट कर व्यक्त की है। कवि का मानना है कि गरीबों की रोटी, कपड़ा ये शोषक वर्ग छीनते है और गरीबों का शोषण कर अपने महलों का निर्माण करते है। 'दिल्ली' कविता में दिल्ली शोषकों का प्रतीक हैं कवि दिल्ली से कहते है–

"हाय! छिनी भूखों की रोटी नमन का अर्द्ध वसन है,
मजदूरों के कौर छिने है, जिन पर उनका लगा दसन है।"[6]

दिनकर के काव्य में राष्ट्रीय चेतना को हम विभिन्न सांस्कृतिक, राजनीतिक, सामाजिक सन्दर्भ में देख सकते है। दिनकर की कविता में जब हम समाज और समाज दर्शन की बात करते है तो उनकी भारतीयता अथवा राष्ट्रीयता को सबसे पहले याद करते है। दिनकर जी वर्तमान राष्ट्रीय साहित्यकारों में महत्वपूर्ण स्थान रखते है। राष्ट्रीय सामाजिक जागरण के प्रहरी और मानवता के प्रबल समर्थक है। उनकी 'हिमालय' शीर्षक कविता अत्यन्त उत्तेजित स्वर में पराधीन वर्तमान को बदलने के लिए युद्ध और प्रलय के पक्ष में अपनी आवाज बुलंद करते है–

"कह दे शंकर से आज करें वे प्रलय फिर एक बार,
सारे भारत में गूंज, टर–टर बम का फिर मंत्रोच्चार।"[7]

रामधारीसिंह दिनकर का नाम राष्ट्रीय सांस्कृतिक चेतना के कवि के रूप में लिया जाता है। दिनकर की राष्ट्रीय चेतना संस्कृ ति एवं इतिहास के संदर्भों से संयुक्त और अतीत गौरव से अनुभूत होकर वर्तमान राष्ट्र–जीवन की समस्याओं का कोई हल ढूँढ निकालते है। दिनकर जी की काव्य रचनाओं में समकालीन जन–समाज उनके परिवेश एवं जागरूकता की छवि देखने को मिलती है। वे राष्ट्र कवि के रूप में समादृत तो है ही वे एक सफल विचारक एवं गद्यकार भी है। हृदय के तारों को झंकृत कर देने वाली काव्यसृष्टि के प्रणेता राष्ट्र कवि दिनकर जी के साहित्य में संस्कृति की आत्मा समाहित है उनके काव्य में राष्ट्रीयता एवं सामायिकता का सशक्त एवं अत्यन्त समृद्ध रूप देखने को मिलता है। बींसवी शताब्दी की राष्ट्रीय चेतना के सम्पूर्ण तत्त्व दिनकर के राष्ट्रीय काव्य में समाहित है।

राष्ट्र की तत्कालीन समस्याओं को एकमात्र समाधान प्रस्तुत करते हुए कवि कहते है–

"अर्पित करो समिध आओ, हे समता के अभिमानी।
इसी कुण्ड से निकलेगी, भारत की लाल भवानी।"[8]

शोषण और अत्याचार के प्रति कवि का हृदय क्षुब्ध हो उठता है और उसे भस्मसात् करने के लिए कवि कांति–धात्रि का आह्वान करता है–

"कांति–धात्रि! जाग उठ, आडम्बर में आग लगा दें।
पतन पाप पाखण्ड जलें, जग में ऐसी ज्वाला सुलगा दे।"[9]

राष्ट्रीय चेतना के युगचारण रामधारीसिंह दिनकर प्रारंभ से अखण्ड भारत के समर्थक रहे। उन्होंने सदैव स्वतंत्रता युद्ध के सेनानियों की तरह अखण्ड भारत पर बलिदान होने का ही सन्देश दिया। उन्होंने खण्डवादी नीति कभी नहीं अपनाई। अंग्रेजों की दमनकारी नीति का कवि पूरी शक्ति से विरोध करता है। 'सामधेनी' में दिनकर भारत माता की दो सन्तानों को युद्ध करते देख कराह उठते है। नौआखली और बिहार के साम्प्रादायिक दंगों के समय भी कवि अपनी घृणा व्यक्त करता हुआ एकता का समर्थन करता है–

"जलते हैं हिन्दु–मुसलमान भारत की आँखे जलती हैं।
आने वाली आजादी को लो दोनों पाँखे जलती हैं,
वे छुरे नहीं चलते छिदती जाती स्वदेश की छाती है,
लाठी खाकर भारतमाता बेहोश हुई जाती है।"[10]

दिनकर के काव्यों में व्याप्त राष्ट्रीयता की सरिता बड़ी ही प्रचंड प्रवाहिनी रही हैं जिसके कल–काल ताण्डव में वर्तमान के कुरूपों को दूर करने के लिए ध्वंस के स्वर सुनाई देते हैं। स्वतंत्रता के पश्चात् यह सरिता मानो जैसे विशाल, विस्तृत मैदान पाकर सौंदर्य के हिलोर में झूल रही थी। दिनकर की रचनाओं में परिलक्षित राष्ट्रीय चेतना का विश्लेषण करने पर मेरी यह दृढ़ धारणा हो गयी है कि दिनकर की राष्ट्रीय कविताओं में योद्धा की गम्भीर गर्जना हैं, अनल का ताप है, सूर्य की प्रखरता है। दिनकर जी केवल रश्मि के ही कवि नहीं वरन् अनल के भी कवि हैं। दिनकर एक ऐसे दीपस्तंभ हैं जिनसे दिग्भ्रमितों को दिशा निर्देश प्राप्त हुआ है। इस दृष्टि से मेरी यह मान्यता है कि दिनकर जी की राष्ट्रीय चेतना का आज के सन्दर्भ में अनुशीलन करना जनमानस में नैतिक मूल्यों की पुनर्स्थापना के लिए अनिवार्य हैं। "दिनकर की सबसे बड़ी विशेषता है अपने देश में कोई ऐसा महान् नेता न दिखाई पड़ने लगा जिसके कानों तक गरीबों की आवाज पहुँच सके। ऐसी स्थिति में कवि नेतृवर्ग से निराश जनता को क्रान्ति के लिए प्रेरित करता है।

"आगे बढ़ खड़ा खड़ा किसकी आशा में समय बिताता है,
जिनकी थी आस बहुत तुझको वे चले गए तहखानों में।"[12]

राष्ट्र कवि अपने देश की जनता एवं धरती से प्रेम करता है, उसके हृदय में देश प्रति अपना सब कुछ अर्पित करने वाले जननायकों के प्रति अप्रतिम श्रद्धा होती है। राष्ट्र कवि यथास्थिति के समर्थक नहीं होते। जिनमें देश को सतत प्रगति के पथ पर ले जाने के लिए अदम्य लालसा होती है। दिनकर के काव्य में निरंतर आगे बढ़ने की छटपटाहट विद्यमान है।

"जिदंगी वहीं तक नहीं ध्वजा जिस जगह विगत युग ने गाड़ी,
मालूम किसी को नहीं अनागत नर की दुविधाएं सारी।"[13]

"दिनकर ने राष्ट्रीयता की पहचान को मात्र भावनात्मक प्रतिक्रिया से उबार कर चिंतन, परीक्षण तथा आत्मालोचन का स्वस्थ रूप देने का प्रयत्न किया, साथ ही इस राष्ट्रीयता को सार्वभौम मानवता के रूप में विकसित होने का स्वप्न देखा।"[14]

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-18, No.-IV, Issues-34, YEAR-Oct-Dec. 2024

कवि सम्पूर्ण जनमानस को देश की रक्षार्थ हेतु बलिदान देने के लिए प्रेरित करते हैं–

"छोड़ो मत अपनी आन शीश कट जाए
मत झुको अनय पर भले व्योम फट जाए
दो बार नहीं यमराज कंठ धरता है,
मरता हैं जो वह एक बार मरता है।"[15]

निष्कर्ष रूप में यही कहा जा सकता है कि रामधारीसिंह दिनकर आधुनिक युग की राष्ट्रीय काव्यधारा के महत्वपूर्ण कवि है। वे निरंतर चार दशकों तक राष्ट्रीय काव्य लिखते रहे। उनकी राष्ट्रीय चेतना केवल प्रेरणा एवं उद्‌बोधन तक ही सीमित नहीं, आदर्शों के प्रति आस्था, पतितों के प्रति सहानुभूति, प्रगति की कामना, सांस्कृतिक मूल्यों के प्रति आस्था उनकी राष्ट्रीय भावना के अभिन्न अंग है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. शिव कुमार शर्मा, हिन्दी साहित्य युग और प्रवृत्तियाँ, अशोक प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण 2022–23, पृ–523.
2. हजारी प्रसाद द्विवेदी, हिन्दी साहित्य उद्‌भव और विकास, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2023, पृ–251.
3. रामधारी सिंह दिनकर, चक्रवाल भूमिका, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2001, पृ–34
4. रामधारी सिंह दिनकर, हुंकार, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2008, पृ–252.
5. रामधारी सिंह दिनकर, कुरूक्षेत्र (द्वितीय सर्ग), राजपाल ऑन्ड सन्स, दिल्ली, 2004, पृ– 23.
6. रामधारी सिंह दिनकर, दिल्ली (हुंकार), लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2008, पृ. 39.
7. रामधारी सिंह दिनकर, हुंकार (हिमालय), लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2007, पृ. 72.
8. रामधारी सिंह दिनकर, सामधेनी (दिल्ली और मास्को) पृ– 57
9. रामधारी सिंह दिनकर, रेणुका, पृ.31.
10. रामधारी सिंह दिनकर, सामधेनी, पृ. 31
11. डॉ. नगेन्द्र, हिन्दी साहित्य का इतिहास, मयूर पैपरबैक्स, इंदिरापुरम, 2015, पृ. 604.
12. दिनकर, नीम के पत्ते, पृ. 18.
13. दिनकर, नील कुसुम, पृ. 16.
14. डॉ. नगेन्द्र, हिन्दी साहित्य का इतिहास, मयूर पैपरबैक्स, इंदिरापुरम, 2015, पृ. 604.
15. दिनकर, परशुराम की प्रतीक्षा, पृ. 13.

*****